ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research e-Journal

अधिगम स्थानांतरण और अध्यापक की भूमिका

पियुषा सोमदेव पंचोली

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research e-Journal

सारांश

अधिगम स्थानांतरण शिक्षा मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण अंश है। यदि यह का जाये कि शिक्षा मनोविज्ञान में हुए प्रयोगोंमें अधिगम–स्थनांतरण प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप से कही न कही विद्यमान रहा है तो अत्युक्ति न होगी। क्रो एवं क्रो ''जब अधिगम के एक क्षेत्र में प्राप्तविचार, अनुभव या कार्य की आदत, ज्ञान या निपुणता का दूसरी परिस्थितिमें प्रयोग किया जाता है तो वह अधिगम स्थानांतरण कहलाता है।'' अधिगम के स्थानांतरण की धारणा का आधार प्राप्त ज्ञान तथा कौशल्य का नवीन परिस्थितियों में प्रयोग करा है। इसे यों भी कहा जा सकता है कि अधिगम को नवीन परिस्थितियों में कार्यरत करना है।

वास्तविकता यह है कि, अधिगम स्थानांतरण के पीछे अनुशासन कार्य करता है। अनुशासन का अर्थ मानसिक शक्तियों का उचित उपयोग है जो किसी विशेष विधिसे कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये होना चाहिए। अतः एक क्रिया का दूसरी परिस्थिति में उपयोग किया जाना ही अधिगम स्थानांतरण है। एक बालक गणित का ज्ञान प्राप्त करके भौतिक शास्त्र या रसायणशास्त्र अथवा सांख्यिकी की समस्याओं को हल कर लेता है। यह क्रिया ही अधिगम का स्थानांतरण है।

समाज में निरीक्षण ऐसा है कि जो अध्येता गुजराती विषय में तेजस्वी होता है वह हिन्दी विषय में भी तेजस्वी होता है। इसी प्रकार बाइसिकल चलानेवाला स्कूटर भी जल्दी से सीख लेता हैं। इस से स्पष्ट है कि एक परिवेश में 68 अधिगम का प्रभाव अन्य परिवेश में अधिगम के समय होता है।

अधिगम के स्थानांतरण के विषय में शिक्षा–2164 कोष में कहा गया हैं – ''प्रत्यक्ष प्रशिक्षण के बिना निश्चित अधिगम में विकास, वृद्धि, संशोधन किसी क्रिया के अभ्यास के द्वारा संबंधित क्रिया में आदान–प्रदान संशोधन ही अधिगम का रुपांतरण है।'' इसका अर्थ यह हुआ कि सीखी गई क्रिया का अन्य समान परिस्थितियों में उपयोग किया जाना अधिगम–स्थानांतरण कहलाता हैं। शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में उसे 'ट्रांसफर ओफ लर्निंग, ट्रांसफर ओफ ट्रेनिंग कहते है। हिन्दी शब्दावली में 'सीखने का स्थानांतरण', 'अधिगम संक्रमण, आदि अनेक नाम प्रचलित है। 'ट्रांसफर' के अनुकूल 'अंतरण' 2164 भी रखा जा सकता है।

अधिगम – अंतरण की समस्या क्यों उत्पन्न हुई? हम समाज में यह देखते हैं कि बालक विद्यालय में जो ज्ञान प्राप्त करता है वह व्यवहार के क्षेत्र में कितना उपयोगी सिद्ध होता है, सामान्यतः विद्यालयों में दिये जानेवाले ज्ञान का जितना उपयोग समाज में होना चाहिएं, उतना नहीं हो पा रहा हैं। अधिगम–अंतरण का मुख्य कार्य समायोजन है। विद्यालय एक लघु समाज है। अतः इस लघु समाज में बालक को जो भी ज्ञान दिया जाये वह ऐसा हो जिसे समाज में उपयोग किया जा सके। अतः वह आवश्यक हो जाता है कि विद्यालय में दिया जाने वाला ज्ञान व्यक्ति के शेषजीवन को समायोजित करने में सहायक हों।

अधिगम स्थानांतरण के सिद्धांत :

1. समरुप तत्व सिद्धांत : धार्नडाईक
2. सामान्यीकरण का सिद्धांत : चार्ल्सबुड
3. दोतत्वका सिद्धांत : स्पीयरमेन
4. पूर्णाफारवाद का सिद्धांत : फोहलर
5. मूलयों का अभिज्ञान सिद्धांत : बागले

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research e-Journal

महोदयों ने अपने–अपने सिद्धांतो को भलिभांति अपनाकर प्रयोग सिद्ध किये हैं।

अधिगम स्थानांतरण के प्रकार :

1. धनात्मक अंतरण :

धनात्मक अंतरण से अभिप्राय है – पूर्व प्राप्तज्ञान या नवीन समस्या को हल करने में सहायक होता है उदाहरणार्थे हम विद्यालय में सीखे गये गणित का उपयोग बाजार में समान खरीदने के समय करते हैं।

2. ऋणात्मक अंतरण :

ऋणात्मक अंतण में पूर्व प्रादन अनुभव भविष्य की समस्या के समाधान में बाधा पहुँचाता है। उदाहरणार्थ यदि कोई व्यक्ति किसी एक की–बोर्ड पर टाइप करना जानता है तो उसे अन्य की–बोर्ड पर टाईपर करने में अतिरिक्त परिश्रम करना होगा।

3. एक पक्षीय अंतरण :

जब शरीरी के एक अंग को दिया गया प्रशिक्षण भविष्य में उपयोगी सिद्ध हो तो वह एक पक्षीय अंतरण कहलाता है। उदाहरणार्थ – बायें हाथ से लिखने का अभ्यास दायें हाथ में चोट लगने पर काम आ सकता है।

4. द्विपक्षीय अंतरण :

जब शरीर के एक पक्ष के अंगो को दिया गया प्रशिक्षण दूसरी ओर के अंगो में चला जाता है तो वह द्विपक्षीय अंतरण कहलाता है। हम बच्चों को दाये हाथ से लिखना तथा काम करना सिखाते है। वह प्रशिक्षण बायें हाथ में बिना किसी अभ्यास के परिवर्तित हो जाये तो द्विपक्षीय अंतरण कहलायेगा ।

5. लंबात्मक अंतरण :

लंबात्म्क अंतरण धनात्मक तथा ऋणात्मक दोनो ही प्रकार का होता है। बालक एक कक्षा में दो ज्ञान प्राप्त करते है उसका उपयोग वे अगली कक्षा में करते हैं। बचपन में सीखी गयी क्रियाओं का उपयोग वे बडे होने पर करते हैं।

6. क्षितीज अंतरण :

जब एक विषय में दिया गया ज्ञान दूसरे विषय को समझने में उपयोगी एवं सहायक सिद्ध होता है। तो यह क्षितिज अंतरण बदलाता है। जैसे गुप्तकाल का इतिहास इस समय के लिये साहित्य तथा संस्कृति को समझने में भी सिद्ध होता है।

वास्तविक यह है कि धनाात्मक अंतरण सामान्य है। ऋणात्मक अंतरण भी उपस्थित होता ही है। यह कैसे पता चले कि धनात्मक या ऋणात्मक अंतरग हो रहा है। इसका सिद्धांत है। ''प्रत्येक उद्दीपन परिस्थिति अनुक्रिया का प्रसार करती है जो भूतकाल की समान उद्दीपन अवस्थाओं से संबंधित हो जाती हैं।'' यह परिस्थिति बाधाओं पर विजय प्रापत करते ही सुधर जाती है।

अधिगम स्थानांतरण और अध्यापक की भूमिका :

औपचारिक अधिगम का सृना अध्यापक है। वह विद्यालय का आधार^। उसका आधार उतना ही महत्वपूर्ण है जितना बालक या विद्यालय में होना। शिक्षा का उद्देश्य छात्रों के व्यवहार में संसोधन करता है। उनका इस प्रकार विकास करना है जिससे वे समाज के, देशके उपयोगी अंग बन सकें। इस कार्य का क्रियान्वन अध्यापक के अभाव में नहीं हो सकता। परिस्थिति का लाभ इस समय तक उठाया नहीं जा सकता जब तक कि अंतरण का

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research e-Journal

अभ्यास नहीं कराया जायेगा। फलतः अध्यापक को इस बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. स्पष्ट ज्ञान :

अध्यापक जिस विषय को पढ़ा रहा है, उसका ज्ञान उसे स्पष्ट होना चाहिये। अध्यापन के समय इस बात का उसे ज्ञात होना चाहिये कि वह किन विषयों में उसे अंतरण का ज्ञान देता है। अतरण स्वयं नहीं होता है, उसकी योजना बनानी पड़ती हैं।

2. बुद्धि :

अध्यापक को चाहिये कि वह कक्षा में कुशाग्रबुद्धि के छात्रों पर अंतरण की दृष्टि से विशेष ध्यान दे। इसका कारण है – जो छात्र कुशाग्र बुद्धि होते हैं, वे अनुभव तथा योग्यता का उपयोग सरलतापूर्वक अन्य परिस्थिति में कर लेते हैं।

3. शिक्षण विधि :

अध्यापक किस विधि से पाठ को पढ़ाता है, अंतरण इस बात पर भी अधिक निर्भर करता हैं। अध्यापक यदि मनोवैज्ञानिक विधि से बालकों को पढायेगा तो वे उसमें रुचि लेंगे और समस्या भी स्पष्ट हो जायेगी। अंतरण की सफलता के लिये आवश्यक है कि शिक्षण को रोचक बनाया जाये।

4. सामान्यीकरण :

अध्यापक को चाहिये कि वह जो कुछ भी पढ़ाये वह सामान्यीकरण के आधार पर ही पढ़ाये। ऐा करने से अंतरण की संभावना अधिक रहती है।

5. समवाय :

शिक्षा में समवाय की अंतरण का मूल बिन्दु है। मूल बिन्दु से ज्ञान को जोडना आवश्यक है। बालको को इस बात के लिये प्रोत्साहन दिया जाये कि वे दो समान वस्तुओं के संबंध तथा अंतर को जान ले। इस दृष्टि से अध्यापक को पाठयक्रम, विधि तथा अन्य विषयों में समवाय की समानता पर ध्यान देना चाहिये। पढ़ायेजानेवाले ज्ञान का संबंध पूर्व अनुभव से कर देना चाहिये।

6. अन्तर्दृष्टि :

अंतरण को स्थायी बनाने के लिये अध्यापक को चाहिये कि अन्तर्दृष्टि विकसित करें पूर्णाकारवादियो के अनुसार बच्चों के समक्ष समस्या पूर्णरुप से रखी जानी चाहिये। समान परिस्थितियों में अन्तर्दृष्टि के अवसर प्रदान करने चाहिये।

7. पाठयक्रम :

आजकल छात्रों को उनकी आवश्यकता एवं रुचि के अनुसार निर्मित पाठयक्रम पर बल दिया जाता है। समाज का प्रतिबिंब विद्यालय है, विद्यालय में पढ़ाया जानेवाला पाठयक्रम छात्रों की आवश्यकता के अनुकूल होना चाहिये। पाठयक्रम के माध्यम से भावि जीवन को आवश्यकताओं का परिचय कराया जाना आवश्यक है। पाठयक्रम का निर्माण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिये कि पाठयक्रम निरर्थक, अनुपयोगी तथा अरुचिपूर्ण न हो, सार्थकता का समावेश सब में होना चाहिये।

8. चिंतन :

अंतरण की सफलता के लिये आवश्क है कि अध्यापक छात्रों में चिंतन का विकास करे। चिंतन का विकास इस प्रकार किया जाये कि वह आदत बन जाये। मर्शेल के अनुसा जब योग्यता बहुत समझदारी से दिखलाई जाती है और खुद उसीकी खातिर संगठित और व्यवस्थित की जाती है तब उसके शिक्षण और संगठन से अंतरण अपने आप ही सरल हो जाता हैं। विलोमतः जब हम किसी योग्यता के अंतरण के लिये जानबुझ कर प्रयत्न करते

हैं तब हम उसी आवादित का रास्ता उस की खातिर प्रशस्त कर देते हैं।

9. अभिवृति का विकास :

यदि अध्यापक यह चाहता है कि उसके छात्रों में अंतरण की योग्यता का विकास हो तो उसके लिये आवश्यक है कि वह छात्रों में ज्ञान के अन्य परिस्थितियों में उपयोग करने पर अधिक बल दे। एसा करने से उनमें अभिवृति का विकास होगा और वे हर परिस्थिति में ज्ञान का उपयोग कर सकेंगे। यह ध्यान रखना चाहिये कि ज्ञान का विकास आदर्श विधि से हो अन्यथा अंतरण में सफलता हनीं मिलेगी।

10. प्राप्त ज्ञान का उपयोग :

अध्यापक को चाहिये कि वह छात्रों को इस बात के लिये प्रोत्साहित करे कि उन्हें जो भी ज्ञान दिया जाये या जो भी क्रिया सिखाई जायें, उसका पूरा–पूरा उपयोग वे सामान्य जीवन में करें। ऐसा करने से छात्रों को अंतर्निदित योगयता का विकास होगा और वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्रमें सफलता प्राप्त करेंगे। प्राप्त ज्ञान का उपयोग ही अंतरण की अपेक्षाओं को पूरा करता है।

अतः शिक्षा मनोविज्ञान के विकास के साथ–साथ अध्ययन–अध्यापन, अधिगम–अनुदेश के कई प्रश्नों के समाधान उपलब्ध हुए। अधिगम स्थानांतरण भी इसी प्रकार का एक शिक्षापयोगी आविष्कार है। उस से अध्ययन–अध्यापकर प्रक्रिया में बहुत ही सहुलियत पेदा हो गई है। शिक्षा में अंतरण के महत्व को मेकगियोक के शब्दों में इस प्रकार स्वीकार करते है – ''जटिल, अमूर्त और अर्थपूर्ण पाठय–वस्तुओं को सीखना और प्रत्ययों द्वारा समस्याओं को हल करना बहुत हद तक अंतरण के कार्य हैं। जहाँ व्यक्ति किसी की समस्या के आधारभूत संबंधो को गहराई तक देखता है या जहाँ उसे उनकी अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है, वहाँ अंतरण योगदान करने वाली एक बडी परिस्थिति बन जाता है।

** ** **